मनसा सेवा - 41

अव्यक्त बापदादा :- (14/12/1987)

➳ _ ➳ महारथियों के हर कदम में सेवा है। चाहे बोलें, चाहे नहीं बोले लेकिन हर कर्म, हर चलन में सेवा है। सेवा बिना 1 सेकंड भी रह नहीं सकते। चाहे मनसा सेवा में हो, चाहे वाचा सेवा में, चाहे संबंध संपर्क से - लेकिन निरंतर योगी भी हैं तो निरंतर सेवाधारी भी हैं।

➢➢ हर प्रकार से सेवा करनी है...

➳ _ ➳ मनसा, वाचा, कर्मणा, चलन से...

➢➢ गुड मैनर्स किसे कहेंगे?

➳ _ ➳ बात करना

→ आप कहकर बात करना...

→ सम्मान देना...

→ ध्यान से पूरी बात सुनना...

■ सुनाना कला है तो सुनना उससे भी बड़ी कला है...

→ मुस्कराते हुए मधुर शब्दों में बात करना...

→ व्यंग्य बाण न छोड़ना...

→ अपनेपन की भास्त्रा देना...

→ प्लीज, थैंक यू, सॉरी शब्दों का प्रयोग करना...

■ इन शब्दों में जादू है...

→ झूठ नहीं बोलना...

→ अपनी ही तारीफ़ न करते रहना...

→ सबको प्रशंषा करना...

■ यदि प्रशंषा नही करते माना अंदर कोई मैं है जो झुकने को तैयार नहीं...

→ congratule करना...

→ coplement देना...

➳ _ ➳ ड्रेस

→ सिम्पल हो...

→ स्वच्छ हो...

→ मर्यादा युक्त हो...

→ शूज बाहर व्यवस्थित रूप से रखना...

→ हर चीज को यग्य की मानना...

■ बाप कहते हैं कि यहाँ तुम्हारी परवरिश पतित पावन बाप से होती है, न कि उस पतित घर से...

→ बाल ठीक हो...

➳ _ ➳ खाने के मैनर्स

→ खाते पीते हुए आवाज न करना...

→ भोजन के समय ज्यादा आवाज न करना...

→ मौन में रहना...

→ चीजों को, बर्तनों को धीरे से रखना, उनको फैंकना नहीं...

→ धीरे धीरे चलना...

➳_ ➳ फोन मैनर्स

→ जोर से न बोलना

→ क्लास में, योग में साइलेंट मोड में रखना...

→ Open door for others

➳_ ➳ ट्रांसपोर्ट मैनर्स

→ वयस्कों, अपंगों, बीमारों को सीट देना...

➳_ ➳ व्यवस्थित जीवन

→ अपनी चीजे व्यवस्थित रखना...

→ समय पर काम करना...

→ समय पर पहुचना...

→ ड्रेस समय अनुसार हो...